International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1121-1122

आज की युवा पीढ़ी 'द्रोपदी' के संदर्भ में

डॉ. रीटा टंडन
Department of Hindi, Government P.G College, Ambala, Haryana, India

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय संस्कृति बहुत समृद्ध रही है। हमारी संस्कृति में धर्म और सत्य की बहुत मान्यता थी। परन्तु जैसे जैसे समाज विकसित होता गया, हमारी मान्यताएं भी परिवर्तित होती गई। बीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक प्रगति के कारण प्राचीन मान्यताएँ बदलती गई। दो महायुद्धों के पश्चात् तो भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव से अछूती न रह सकी। कई वर्षों तक अंग्रेज़ों की पराधीनता के पश्चात् जब स्वतन्त्रता प्राप्त हुई तो यह प्रभाव इतना बढ़ गया कि हम उसकी नकल में अपने परिवार को बिखराब एवम् टूटन की स्थिति में पहुंचाने लगे। बदलते परिवेश के कारण विचारधारा भी बदलने लगी, धार्मिक एवम् नैतिक आस्थाएँ विलुप्त हो गई। भारतीय शिक्षा नीति में परिवर्तन न आने के कारण अंग्रेज़ों की शिक्षा नीति का प्रसार–प्रचार बढ़ने लगा और अंग्रेज़ों संस्कृति के प्रभाव के कारण आज सैक्स ही नर–नारी के संम्बन्धों का आधार बन चुका है। पारिवारिक संम्बन्धो में आपसी प्रेम की भावनाएं समाप्त हो गई और संघर्ष की स्थिति स्पष्ट दिखाई देने लगी।

पाश्चात्य संस्कृति का सबसे अधिक प्रभाव हमारी युवा पीढ़ी पर पड़ा। इसी कारण हमारी युवा पीढी दिशाहीन होने लगी 'आज का पल तेजी का पल है। यह युग ही उस का है। वे ही सन्नाटा है। शताब्दी के बुखार का व्यक्ति शिकार है। आदमी अकेला भी है और एक भीड़ का हिस्सा भी, वह मज़बूर भी है और उग्र भी। वह रिश्वत लेता भी है देता भी है। यह गाली खाता है गोली भी। वह दुश्मन भी है और दोस्त भी। वह सैक्स पीड़ा से ग्रस्त है। वह नशीली वस्तुओं का सेवन भी करता है।''[1]

आज के युवक युवती विवाह के लिए जीवन साथ के चुनाव में भी स्वतन्त्रता चाहते हैं। प्रेम संम्बन्धों के आधार पर शादी करना चाहते हैं जिसके कारण पारिवारिक संघर्ष एवम् बिखराव की स्थिति आ जाती है। युवा लोग स्वतन्त्र जीवन जीना पसन्द करते हैं। आज की आधुनिक युवती अपने अभिमानी प्रेमी के साथ रहना भी पसन्द नहीं करती। इसी कारण पति पत्नी का सम्बन्ध भी खोखला करता जा रहा है। डॉ. नगेन्द्र का कथन हैः– आज के युवक युवती स्वतन्त्र जीवन की ओर बढ़ने लगे हैं। सैक्स सम्बन्धी अनेक जटिलताएँ उत्पन्न कर दी हैं। इस के साथ एक विषमता सामने आई, वह भी अर्ध–आधुनिक नारी और अभिमानी पुरूष की जिस के कारण विवाह का प्रश्न उत्यन्त जटिल बन गया।''[2]

अलकाः– 'अलका' सुरेन्द्र वर्मा के द्रोपदी नाटक की युवा पात्र है। वह सुरेखा एवम् मनमोहन की बेटी है तथा इस नाटक में आज की युवतियों का प्रतिनिधित्व करती है। वैसे तो अभी वह विश्वविद्यालय की छात्रा है। लेकिन 'राकेश' नाम के लड़के के साथ उस का प्रेम सम्बन्ध है। 'अलका' आधुनिक युवक युवतियों के समान यौन सम्बन्धों में रुचि रखती है और यौन सम्बन्धी चर्चा में किसी भी प्रकार की झिझक महसूस नहीं करती है।

अलका घर के वातावरण में घूटन महसूस करती है। उसका पिता 'मनमोहन' हर शनिवार एक नई स्त्री के साथ यौन–सम्बन्ध स्थापित करता है। घर को सम्भालने का प्रयास करती है 'सुरेखा' भी इस वातावरण से अछूती नहीं है। सुरेखा समाज की बदलती हवा को पहचानती है और अपनी बेटी को सावधान करती है।

वह अलका को सारे दाँव–पेंच सिखाना चाहती है जिस से वह अपने प्रेमी से शादी कर सके। वह उसे यहाँ तक छूट दे देती है– राजी खुशी देती जा उसे जो कुछ वह चाहता है।[3]

सुरेखा 'अलका' के साथ अत्याधुनिक माँ का व्यवहार करती है। वह उससे उस के यौन सम्बन्धों के बारे में पूछती है और उसे प्रेरित करती हुई करती है– परसों शाम को साड़ी बांध कर कहाँ गई थी... ... जब आयी थी तो कैसी मसली हुई.... पता है ये तेरा हफ्ता सेफ नहीं है?'[4] और उस का पिता मनमोहन तो यहां तक कह देता है कि .....(लड़का निहायत ही बेवकूफ है। छह महीनों में सिर्फ ब्लाउज के बटनों तक ही पहुंच सकता है।'[5] अतः पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित अलका दिशाहीनता की ओर बढ़ रही है। माता–पिता अपनी सन्तान को पथभ्रष्ट होने के बजाए उसे इस मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। रमेश बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

रमेश गौतम का कथन है 'अलका का स्वेच्छानुसार भरा अभिसार माता–पिता के आचरणों की फलीभूत परिणति है। यहां तक कि वह अपनी मां यह बताने में तनिक लज्जा या संकोच अनुभव नहीं करती कि उसके प्रेमी ने उस के ब्लाउज के बटन खोले हैं। मां भी उस की भर्त्सना करने की बजाय उस को प्रेरित करती है। इस के द्वारा नाटककार ने समाज की उस विकृति को साकार रुप प्रदान किया है जो पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण से हमारे समाज को दूष्ति कर रही है।'[6]

अलका का प्रेमी राजेश अलका के साथ यौन सम्बन्ध बनाना चाहता है। प्रेम वार्तालाप में एक आदर्श प्रेमी की तरफ अपनी प्रेमिका की प्रशंसा करता है..... 'तुम्हारी नाक –जूली–क्रिस्टी की तरह।'[7] और उससे यौन–सम्बन्धों का अनुरोध करता है .....'एक तरफ तो कहती होकि मुझे इतना ढेर सा प्यार करती हो, पर मेरी इतनी जरा सी बात नहीं मान सकती?.....मेरे पास वो चीज है..... तुम बेकार डर रही हो। तुम्हें कुछ नहीं होगा।... सब लोग करते हैं, मगर तुम हो कि, फिजूल की जिद, पकड़ के बैठ गई हो.....पांच मिनट का तो सवाल है। अतः आज की युवा पीढ़ी सैक्स पर आधारित प्रेम को ही सब कुछ मानती है।

वर्षा

वर्षा अलका के भाई अनिल की प्रेमिका विश्वविद्यालय की छात्रा है। अनिल और वर्षा के बीच यौन सम्बन्ध हैं, जो सम्बन्ध अलका और राजेश में है। वर्षा भी एक स्वछन्द विचारों वाली युवती है। वर्षा के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए अनिल वही संवाद बोलता है जो राजेश अलका के सामने बोलता है वह कहता है –'तुम्हारा कहना बहुत माना है मैंने।– आज तुम्हें मेरी बात, माननी पड़ेगी।'[9] अतः

केदारनाथ सिंह का कथन उचित है – 'इन (अलका–वर्षा) के चरित्र के माध्यम से इस नाटक में आधुनिक छात्राओं के चरित्र को किंचित असंगत ढंग से भी उघाड़ कर रख दिया है। प्रेमियों में खुलेआम चुम्बन उपहार–ग्रहण एवम् उन्मुक्त आचरण पथभ्रष्ट युवा पीढ़ी की चिंत्य समस्याएं हैं।'[10]

अनिल

'अनिल' द्रोपदी नाटक का युवा पात्र है। वह अलका का भाई है और इस नाटक में पथभ्रष्ट युवकों का प्रतिनिधित्व करता है। अनिल 'वर्षा' से प्रेम करता है। अनिल वर्षा नाम की लड़की से प्रेम करता है। अनिल और वर्षा के बीच अनैतिक सम्बन्ध है। घर के वातावरण तथा पिता 'मनमोहन' के चरित्र का सन्तान पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अनिल अलका और राजेश के सम्बन्धों का विरोध करता है। अलका अपने भाई की इस बात को नहीं मानती और अपने भाई के साथ अशिष्ट व्यवहार करती है, ''मैं तेरा मुँह नोच लूँगी।'[11]

अनिल स्वच्छन्द विचारों वाला युवक है। वह शरीर आधारित प्रेम को वास्तविक प्रेम मानता है। इसलिए गर्भनिरोधक दवाएं भी अपने पास रखता है। मनमोहन सुरेखा को बताता है .....अभी उसके कमरे में गया था मैं.....सिगरेट के टुकड़े ..... एक से एक गन्दी किताबें और तस्वीरें– सुना है, चरस और एव0एस0डी0 का शौक भी फर्माते हैं कभी–कभी .....एक ओर चीज़ भी उसके कमरे में.....दराज़ के भतर ताले में बन्द।'[12]

'राजेश' अलका का प्रेमी है, आवारा एवम् चरित्रहीन। राजेश भी अनिल की तरह स्वच्छतावादी युवा पात्र है। अलका के साथ प्रेम सम्बन्ध है। वह लड़कियों को खिलौना समझता है। वह अलका के साथ यौन सम्बन्ध बनाने का अनुरोध करता है, अलका सोचना चाहती है तो इस पर राजेश बिगड़ जाता है.....'कब से सोच रही हो? फैसला नहीं हो पाया अब तक? बस, सोचना .....'तभी तो हिन्दुस्तान की तरक्की नहीं होती।'[13]

अनिल और राजेश दोनों ही पढ़ाई की तरफ से ध्यान नहीं देते। घर से पढ़ने के लिए जाते हैं और पढ़ाई की आड़ में यौन सम्बन्ध स्थापित करते हैं। अल्ट्रा मार्डन पश्चिमी संस्कृति के पोषक ये युवक सैक्स की तृप्ति के लिए अनेक तरकीब अपनाते हैं। इनमें जीवन के प्रति कोई हौंसला नहीं है। विद्यार्जन के प्रति उत्साह नहीं हैं। सम्पन्न माँ बाप के लाडले समय से पहले ही ऐश्वर्य–भोग के कीचड़ में फंस चुके हैं और पथभ्रष्ट युवा –पीढ़ी को संकेतित करते है।'[14]

सुरेन्द्र वर्मा के नाटक द्रोपदी के युवा पात्र पथभ्रष्ट युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। पढ़ाई से अधिक सैक्स में रुचि रखने वाली युवा पीढ़ी का चरित्र–चित्रण करते हैं 'अलका–राजेश, अनिल–वर्षा दिशाहीन विश्वविद्यालय के युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो यौन कुण्ठाओं से ग्रस्त हैं तथा उन्हीं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील भी है। अलका और अनिल के चरित्रों द्वारा नाटककार ने उच्चवर्गीय परिवारों में टूटते भाई–बहनों का चरित्र प्रस्तुत किया है।[15]

अतः घर एवम् समाज की परिस्थतियों से प्रभावित ये पात्र दिशाहीन मार्ग की ओर बढ़ रहे हैं। पाश्चात्य रंग में रंगे इन पात्रों को उचित मार्ग दर्शन की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. चोपड़ा, जगमोहन 'हिन्दी नाटकों में युवा मानस की तस्वीर (लेख सं. विनय, समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली भारती भाषा प्रकाशन, 1981, पृ028)
2. नगेन्द्र, आधुनिक हिन्दी नाटक, दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1970, पृ0 38
3. वर्मा, सुरेन्द्र तीन नाटक (द्रोपदी) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली 1972 पृ. 101
4. वर्मा, सुरेन्द्र, तीन नाटक (द्रोपदी) पू0 उ0 पृष्ठ 102
5. वहीं पू. पृ0 103
6. गौतम, रमेश, हिन्दी के प्रतीक नाटक, दिल्ली, नचिकेता प्रकाशन, 1980, पृष्ठ 246
7. वहीं पृ0 12। वर्मा सुरेन्द्र तीन नाटक (द्रोपदी) पृ.उ.
8. वर्मा सुरेन्द्र तीन नाटक (द्रोपदी) पू. उ. पृ 122
9. वहीं पृष्ठ–126
10. सिंह केदारनाथ, हिन्दी के प्रतीक नाटक और रंगमंच, कानपुर, विद्याविहार प्रकाशन, 1985 पृ0 233
11. वर्मा, सुरेन्द्र तीन नाटक (द्रोपदी) पू. ऊ.
12. वर्मा, सुरेन्द्र तीन नाटक (द्रोपदी) पू. ऊ0 पृष्ठ 104
13. वर्मा, सुरेन्द्र द्रोपदी पू0ऊ0 पृ0 122–123
14. गौतम रमेश, हिन्दी के प्रतीक नाटक पू.ऊ.पृष्ठ246
15. वहीं